International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 356-357

कौशल विकास नीति भारत में उद्यमिता की स्थिति

डॉ0 केशरी नन्दन मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय पी.जी. कालेज, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारत में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों की बहुतायत होने के कारण नए उद्यमों की स्थापना द्वारा रोजगार के अवसरों का सृजन आवश्यक है। नेशनल सेम्पल सर्वे आर्गेनाइजेशन के 66वें राउण्ड के अध्ययन में यह सामने आया कि 2004–05 की तुलना में 2009–10 में शिक्षण संस्थानों में 15–24 वर्ष के युवाओं की संख्या 3 करोड़ से बढ़कर लगभग 6 करोड़ हो गयी। इतनी बड़ी संख्या में युवाओं की वृद्धि पूर्व के वर्षों की तुलना में कम हुई। इस कारण उस समय तो बेरोज़गारी की दर कम हो गयी परंतु अब वही युवा रोजगार हेतु कार्यरत जनसंख्या का हिस्सा बन रहे हैं। इसीलिए बढ़ी संख्या में रोजगार सृजन औ आजीविका के साधनों को बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए स्वरोजगार एंव उद्यमिता का विकास एक बेहतर विकल्प है। उद्यमिता के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसी वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री ने 'स्टार्ट अप इंण्डिया स्टैण्ड अप इंडिया' नारा दिया। अब नए उद्यमों यानी स्टार्ट अप के विकास पर ध्यान केंन्द्रित किया गया है। देश की 1.25 लाख से भी अधिक बैंक शाखाओं में से प्रत्येक को कम से कम एक दलित/आदिवासी उद्यमों और कम से कम एक महिला उद्यमी को स्टार्ट अप स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित करना है।

'ग्लोबल आंत्रप्रेन्योरशिप मॉनीटर' रिपोर्ट

उद्यमिता के क्षेत्र में 1999 से वैश्विक स्तर पर प्रारंभ 'ग्लोबल आंत्रप्रेन्योरशिप मॉनीटर' (जी.ई.एम.) के 2014 में हुए 16वें अध्ययन में 73 देशों की अर्थव्यवस्थाओं, विश्व की 72.4 प्रतिशत जनसंख्या एवं 90 प्रतिशत जीडीपी को शामिल किया गया। 2014 में हुए अध्ययन में पूरे विश्व से कुल 2,06,000 व्यक्तियों एवं 3,936 विशेषज्ञों की राय ली गई। यह उद्यमिता के क्षेत्र में पूरे विश्व में सबसे बड़ा अध्ययन है। यह उद्यमिता के प्रति व्यक्तियों की अभिव्यक्ति, उद्यम की स्थापना के विभिन्न चरणों में सक्रियता, आत्मविश्वास आदि का मापन करता है। यह अध्ययन विभिन्न देशों में उद्यमिता सक्रियता में अंतर, इसका देश के आर्थिक विकास से संबंध, किसी देश की जनसंख्या को उद्यमी बनाने संबंधित गुणों का पता लगाने का प्रयास है। इसमें उद्यमिता सक्रियता व्यक्तियों की स्वयं की अभिप्रेरणा, सक्रियता, कौशल द्वारा उपलब्ध अवसरों की पहचान, उपयोग एवं संबंधित वातावरणीय कारकों का परिणाम के रूप में परिभाषित है।

भारत को कारक आधारित विकास मूलभूत आवश्यकताओ के जैसे संस्थाओं का विकास, स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा, आर्थिक स्थायित्व आदि पर आधारित होता है।

तलिका 1: भारत में विभिन्न उद्यमिता चरों की वर्षवार दर (प्रतिशत में)

चर	2001	2002	2006	2007	2008	2013	2014
प्रत्यक्षीकृत योग्ताएं	40	42	62	73	58	56	36.7
प्रत्यक्षीकृत अवसर	31	42	52	71	58	41	38.9
असफलता से डर	33	27	24	50	46	39	37.7
किसी स्टार्टअप उद्यमी को जानना	15	25	63	77	60	39	–
नव उद्यमिता दर	6.9	9	5.2	6	6.9	5.1	4.1
नए व्यापार स्वामित्व की दर	3.6	7.5	5.2	2.6	4.9	4.9	2.5
कुल प्रारंभिक उद्यमशीलता गतिविधि की दर	10.8	16	10.1	8.5	11.5	9.9	6.6
वांछनीय कैरियर विकल्प के रूप में उद्यमिता	–	–	67	67	67	61	58

तालिका–1 में विभिन्न चरों हेतु 18–64 वर्ष आयु की जनसंख्या में प्रतिशत दिखाए गये हैं। तालिका से स्पष्ट है कि भारतीय जनसंख्या में उद्यमिता हेतु स्वयं में योग्यता देखने वाले लोगों के प्रतिशत (प्रत्यक्षीकृत योग्यता) में कमी हुई है। 2006 व 2007 में यह क्रमशः 62 व 73 प्रतिशत थी जो 2014 में घटकर 36.7 प्रतिशत रह गई। इसी तरह प्रत्यक्षीकृत अवसर अर्थात किसी उद्यम को शुरू करने के लिए उपलब्ध अवसरों की पहचान करने की क्षमता रखने वाले व्यक्तियों में भी कमी आई। इसलिए कौशल विकास प्रशिक्षण में उद्यमिता संबंधी योग्यता विकास करने पर धान देना आवश्यक है। 2014 में उद्यमों में असफलता की दर में पूर्व वर्षों की तुलना में अवश्य कमी हुई है। किसी नए प्रारंभिक उद्यमी को जानने वाले लोगों का प्रतिशत 2006, 2007 व 2008 में बढ़ा था। 2013 में इसमें भी कमी आई उपरोक्त वर्णित चर तो व्यक्ति की उद्यमी मानसिकता का मापन करते हैं।

सबसे चिंताजनक स्थिति उद्यमिता सक्रियता संबंधित चरों मे आई है। इनमें नवउद्यमिता दर पूर्व वर्षों की तुलना में कम हुई। नवउद्यमिता दर से तात्पर्य उन व्यक्तियों के प्रतिशत से है जो किसी उद्यम को प्रारंभ करने में सक्रिय है एवं जहां उद्यम मालिकों को तीन महीने से अधिक समय के लिए आय नहीं हुई है। पिछले 15 वर्षों में यह घटकर सबसे कम 4.1 प्रतिशत हो गई। इसी प्रकार नए व्यापार स्वामितव की दर भी 2013 में 4.9 प्रतिशत थी जो 2014 में घटकर 2.5 प्रतिशत रह गई। नए व्यापार स्वामित्व की दर से तात्पर्य उन उद्यमियों के प्रतिशत से है जो 3 महीनों से अधिक व 42 महीनों से कम अवधि के लिए उद्यम का संचालन कर आय

प्राप्त कर चुके हैं। नवउद्यमिता व नए व्यापार स्वामित्व दर दोनों को मिलाकर कुल प्रारंभिक उद्यमशीलता (टी.ई.ए. या होटल आंत्रपेन्योरशिप एक्टिीविटी) की दर कहा जाता है। वर्ष 2013 में यह दर 9.9 प्रतिशत थी जो 2014 में घटकर 6.6 प्रतिशत रह गई। पिछले 15 वर्षों में यह दर सबसे कम रही। कुल टी.ई.ए. में से भी 40 प्रतिशत उद्यम आवश्यकता आधारित थे, जिसका अभिप्राय यह है कि उन उद्यमियों के पास और कोई विकल्प नहीं था, इसलिए उन्होंने उद्यम को प्रारंभ किया। विकसित देशों मे नवाचार आधारित उद्यमिता का प्रतिशत अधिक रहता है। 18 से 64 वर्ष की आयु के 58 प्रतिशत व्यक्ति उद्यमिता को एक बेहतर करियर विकल्प के रूप में देखते हैं।

निष्कर्ष यह है कि भारत में नए उद्यमों की स्थापना बहुत कम हो रही है। जो उद्यम स्थापित हो रहे है, वे भी लंबे समय तक चल नहीं पा रहे है। उद्यमिता में सुधार के लिए रोजगार सृजक क्षेत्रों जैसे कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, चमड़ा उद्योग, कपड़ा उद्योग, सेवा क्षेत्र, व्यापार, होटल, रेस्तरां, पर्यटन, निर्माण, सूचना तकनीकी आदि में स्वरोजगार और लघु एवं मध्यम उद्यमों को बढ़ावा देने हेतु कौशल पशिक्षण आवश्यक है।

उद्यमिता की आवश्यकता

भारत की जनांकिकीय लाभ की इस स्थिति में युवाओं को नौकरी के अवसर तलाश करने के स्थान पर उद्यमिता द्वारा नौकरी प्रदाता उद्यमी के रूप में स्वयं को स्थापित करने हेतु अभिप्रेरित प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। विद्यालयों, महाविद्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों में उद्यमिता चेतना जागृत करने, प्रेरणा प्रदान करने के साथ ही आवश्यक तकनीकी कौशल, वित्तीय प्रावधानों की सूचना देने, उद्यमिता के तीन महत्वपूर्ण तत्वों– नए विचार या नवाचार, जोखिम लेने की प्रवृत्ति तथा उपर्युक्त अवसरों को पहचानने की क्षमता आदि का विकास करने हेतु प्रयास किये जाने चाहिए। उद्यमिता विकास देश के कौशल विकास कार्यक्रम में वृहद स्तर पर शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए सफल उद्यमियों को कौशल प्रदाताओं, प्रशिक्षकों के रूप में जोड़ना चाहिए। भारत में ऐसे नवाचार आधारित सफल उद्यमियों के अनेक उदाहरण हैं।

भारत में उद्यमिता नवाचार के उदाहरण

भारत में उद्यमिता के क्षेत्र मे नए प्रयोग हो रहे है। नए विचारों द्वारा उद्यम स्थापित हो रहे हैं। नए विचारों द्वारा उद्यम स्थापित हो रहे हैं। आई आई एम व आई आई टी जेसे प्रतिष्ठित संस्थानों में युवा अच्छे वेतन वाली नौकरियों को नकार कर उद्यमिता के क्षेत्र में हाथ आजमा रहे हैं, सफलता प्राप्त कर रहे हैं। ऐसे भारतीय उद्यमियों की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने नवाचार द्वारा अपने उत्पादों, सेवाओं, प्रक्रियाओं, अभिकल्पों एवं तकनीक में व्यापक बदलाव किये एवं सफलता अर्जित की।

उदाहरण के लिए यात्री अक्सर रेलगाड़ियों में खराब खाने की समस्या से जूझते है। एक उद्यमी ने इस समस्या को अवसर के रूप में देखा एवं तकनीक के उपयोग द्वारा रेलगाड़ियों के स्टेशन पर पहुंचने के समय को पता लगाकर यात्रियों को अच्छी गुणवत्ता वाला गर्म भोजन उपलब्ध करने हेतु एक उद्यम की स्थापना की। ग्राहक अपनी पसंद के अनुसार भोजन के ऑनलाइन आर्डर भी दे सकता है। एक उद्यमी ने बिजली की कमी की समस्या को देखते हुए सोलर पैनल के उत्पादन एवं बिक्री हेतु उद्यम स्थापित किया। छोटे शहरों के लोगों को महानगरों में उपलब्ध चिकित्सकों की सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध करवाना, मोबाइल एप के उपयोग द्वारा पांच से सात मिनट में टैक्सी की उपलब्धता होना, बसों का घर बैठे रिजर्वेशन करवाने की सुविधा, प्रतिस्पर्धात्मक दरों पर विभिन्न उत्पादों की आपके घर क पहुंच आदि सभी तकनीकी ज्ञान के समावेश एवं नवाचार आधारित उद्यमों के उदाहरण हैं जो भारत में सफल हुए है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. होजला रूचि। शार्टेज ऑफ स्किल्ड वर्कर्सः अ पेरेडॉक्स ऑफ दी इण्डियन इकोनॉमी स्कोप रिसर्च पेपर नं. 111 नवंबर 2012, कोम्पस, युनिवर्सिटी ऑफ आक्सफोर्ड, 2012।
2. मेक्लीन रूपर्ट, जगन्नाथन शान्ति, सार्वी जूको। स्किल्स डवलपमेंट फॉर इनक्लूसिव एण्ड सस्टेनेबल ग्रोथ इन डवलपिंग एशिया पेसिफिक, स्प्रिंगर, 2013।
3. चन्दा रूपा, एवं अन्य। ब्रिजिंग दी स्किल गेप्स इन इण्डियाज लेबर मार्केट, तेजस, आईआईएम बैंगलोर, 2014।
4. एम.टी.। एमबीए टेलेंट पूल रिपोर्ट की फाइण्डिंग्स, बैंगलोर, मेरिटट्रेक पब्लिकेशन्स, 2011।
5. यूनेस्को। सैकण्डरी एज्यूकेशन रिफार्मः टूवर्डस ए कन्वर्जेंस ऑफ नॉलेज एक्वीजिशन एण्ड स्किल डवलपमेंट, 2005।
6. जनगणना। के आंकड़ेः महापंजीयक सह जनगणना आयुक्त का कार्यालय, 2012।
7. फिक्की। स्किल्स फॉर ऑल, न्यू एप्रोचेज ऑफ स्किलिंग इण्डिया, फिक्की स्किल डवलपमेंट फोरम एवं सिटी गिल्ड्स मनिपाल ग्लोबल, 2012।
8. Government of India. *Seizing the Demographic Dividend-Chapter 2*, Economic Survey. New Delhi: Ministry of Finance, 2012-13.
9. Government of India. *Twelfth Five Year Plan (2012-2017) Social Sectors*, *volume 3*. New Delhi: Planning Commission, 2013.
10. World Economic Forum. Global Competitiveness Report 2011/12. World Economic Forum, 2011.
11. FICCI-KPMG. *Skilling India- a look back at the progress, challenges and the way forwar*, 2012.
12. FICCI-Ernst & Young. *Knowledge Paper on Skill Development in India-Learner First*, 2012.
13. UNESCO. *Learning: The Treasure Within*. Paris: UNESCO, 1996.
14. UNESCO. *Education for All Global Monitoring Report 2012. Youth and Skills: Putting Education to Work*. Paris: UNESCO, 2012.
15. DGET (Various Years). Annual Report. Report of the Directorate General of Employment and Training, Ministry of Labour and Employment, India.
16. Ministry of Human Resource Development. Annual Report, Government of India, New Delhi, 2008-09.
17. World Bank. Skill Development in India – The Vocational Education and Training System, Human Development Unit, South Asia Region, 2006.